(कहानी)

खुर्शीद

छांव जो मर गई

यह एक बहुत पुराना पेड़ है। इस पेड़ पर हर किस्म के पंछी रहते थे। इस पर उनके घोंसले थे। उनमें ही वे अंडे देते थे और अपने बच्चों को पालते थे। वे बच्चे बड़े होकर इस पेड़ पर ही अलग-अलग अपने घोंसले बना लेते और अपने बच्चों को पालते। यह सिलसिला पुश्तैनी से इसी तरह चलता आ रहा था। किसी को कोई चिंता नहीं थी। सुबह होती, पंछी दूर-दूर तक दानों की तलाश में उड़ जाते। शाम को अपने पेट में दाने भर कर लौटते। अपने-अपने घोंसलों के पास बैठ कर अपने बच्चों को चुग्गे खिलाते और अपना पेट खाली करके शाम के गीत अलापते। दिन चढ़ते फिर उड़ जाते- शाम को अगर कोई पक्षी दाना लेकर देर में पहुंचता तो दूसरे पक्षी उसके बच्चों को चुग्गा देते। एक-दूसरे के बच्चों को टहनी पर बैठा कर उड़ना सिखाते। अगर किसी पक्षी की मृत्यु हो जाती तो उसके बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते। उसके बच्चों का अपने बच्चों की तरह ही ख्याल रखते। उन सभी पक्षियों के लिए जन्म से लेकर मरने तक यही एक वृक्ष था। वृक्ष उनके लिए बाप के साए की तरह था और इसकी छांव मां की गोद की भांति थी।

इस वृक्ष की छांव का और इस पर रहने वाले पक्षियों की आपसी हमदर्दी, प्यार, मिलनसारिता और एकता की चर्चा बहुत दूर-दूर तक फैल गई। दूरदराज में बैठे पंछी इस विषय में और इस पेड़ पर रहने वाले पंछियों के बारे में बातें करते और उनके दिलों में इनके बारे में श्रद्धा उत्पन्न होती। दूर-दूर से पक्षी इनको देखने आते। कुछ समय इस पर पंछियों के साथ गुजारते और इनसे बहुत कुछ सीख कर वापस चले जाते, और दूसरे पक्षियों को जाकर सारा हाल सुनाते। वे प्रभावित हुए बिना न रहते। कहते, 'आज सारी दुनिया के पक्षियों की जो सोच है, जिसको वे अपनी कहते हैं, इस पेड़ के पक्षियों की देन है।'

जहां इस वृक्ष पर पाहुन पक्षी आते, कुछ समय रहते और खुशी खुशी वापस चले जाते, वहीं वे भी आने लगे जो इस वृक्ष पर ठहरते और पक्षियों के बच्चों को मार देते। उनके घोंसलों को नष्ट कर देते। उनमें जो कुछ मिलता, ले लेते। और दिन निकलने से पहले ही उड़ जाते।

दिन निकलते ही इस पेड़ पर मातम छा जाता। उसके पत्ते झड़े होते और सारे पेड़ या घोंसलों के तिनके बिखरे पड़े होते। कुछ पक्षी और उनके बच्चे उसके नीचे मरे पड़े होते। पंछी उस दिन कोई उड़ान न भरते, जैसे उनके पंख कतर दिए गए हों। वे टहनियों के ऊपर गर्दन नीचे लटकाए बैठे रहते। कभी-कभी एक दूसरे की ओर देख लेते, चुपचाप फिर गर्दन झुका लेते... उस दिन शाम को कोई पक्षी गीत न गाता। कुछ दिन ऐसे ही रहते और फिर जिंदगी की गति पहले जैसी ही चलने लगती। पहले की तरह ही उड़ानें भी भरी जातीं, चुग्गे आते और शाम को गीत अलापे जाते।

कुछ दिन बाद फिर कोई जमात आती पेड़ की छांव और पंछियों की जिंदगी को हिलोर कर रख जाती। फिर कुछ दिन ऐसा लगता जैसे पेड़ पक्षियों के साथ ही पाताल में उतर गया हो।

अब इस पेड़ पर कोई भी मेहमान पंछी न आता। कुछ अर्से के बाद एक जमात इस वृक्ष पर आई। इस जमात ने आते ही घोंसलो को नष्ट करने की जगह उस पर अपना कब्जा कर लिया। पेड़ पर युगों से रहते आ रहे पक्षियों को अपने घोंसले छोड़ने पड़े। अपने कब्जियाए हुए स्थान पर पहले के पंछियों को फटकने भी न देते। जो उधर जाता उसे उसी जगह पर मार डालते। सभी पक्षी ऊपर की टहनियां छोड़कर नीचे की डाली पर आ गए। इनके भीतर की खुशी जड़ से उखड़ी घास की तरह सूख गई थी। वे अपनी डालियों पर चुपचाप बैठे रहते। इनको ऐसा लगता जैसे वे किसी बेगाने पेड़ पर आ कर बैठे हों। ये घुसमुसे में ही बाहर दाना चुगने चले जाते और काफी अंधेरा होने पर वापस लौट आते। अब उनकी वृक्ष पर जल्दी आ जाने की तमन्ना खत्म हो गई थी। कई बार वे रात को पेड़ पर न आने की भी सोचते पर बच्चों का ख्याल आते ही जल्दी-जल्दी उड़ानें भरते। कई बार पेड़ की ऊपर वाली फुनगियों पर आने की सोचते, जहां उनके पुरखे और वे स्वयं युगों से रहते आ रहे थे। पर वह झट ही महसूस करते जैसे वह कोई गुनाह हो। शाम को चुपचाप आकर नीचे वाले घोंसलों में बैठ जाते और जीभ तक न हिलाते।

दूसरी जमात वाले पक्षी पेड़ के ऊपर वाली फुनगियों पर रहते। वे सर्दियों में ऊपर बैठकर धूप सेंकते और अपने बच्चों को भी सेंकाते। नीचे की टहनियों पर निवास करने वाले पक्षियों में यदि कोई पक्षी पेड़ के ऊपर हवा में उड़ता देखा जाता तो उस जमात वाले सारे पक्षी उस पर झपट पड़ते, उसको मारकर पेड़ की सबसे ऊंची फुंनगी पर टांग देते, ताकि कोई और नीचे रहने वाला पक्षी इस पेड़ के ऊपर उड़ान भरने का साहस न कर सके।

इस पेड़ की जिंदगी कई पुश्तों तक ऐसे ही चलती रही।

फिर एक दिन अचानक इस पेड़ पर गिद्धों की जमात आ बैठी। ऊपर वाले पक्षियों ने इनको वहां से भगा देना चाहा। लड़ाई हुई, पर काफी नुकसान उठाने के बाद ऊपर वाले पक्षी पुश्तों के बाद, ऊपर की टहनियां खाली करके अपने घोंसले छोड़ कर नीचे की डालियों पर आ गए। नीचे रहने वाले पक्षी वैसे ही उनसे डरे हुए थे, इसलिए इन्होंने उन पक्षियों के लिए अपने घोंसले खाली कर दिए। पर अब वे पक्षी इनके बच्चों को नहीं मारते थे और न ही पक्षियों को। जो पक्षी पहले नीचे की टहनियों पर रहते थे, वे और दूसरी जमात वाले पक्षी जो गिद्धों की जमात से मार खाकर नीचे की टहनियों पर आ गए थे, अक्सर एक साथ बैठे देखे जाते। सुबह दाना चुगने जाते समय भी साथ-साथ उड़ते, साथ-साथ वापस आते। अपने बच्चों को चुग्गा देते और उनको उड़ना सिखाते। पर खुशी के गीत इस पेड से पंख लगा कर उड़ गए थे। अब वे एक दूसरे को भाई-भाई कहते और एक दूसरे के बच्चों के साथ कलोलें करते। उनमें आपसी हमदर्दी, प्यार, मिलनसारिता और एकता पहले की तरह ही पैदा हो गई। अब वे सभी इकट्ठा होकर पेड़ की फुनगी पर बहुत ऊंची-ऊंची उड़ानें भरते वहां से नीचे की ओर झुंड बनाकर गिद्धों के घोंसलों पर गिरते। इससे घोंसलों में बैठे गिद्धों के बच्चे मर जाते। इस प्रकार गिद्धों के बच्चों को नीचे की डालों पर रहने वाले पक्षी मारते रहे।

पेड़ की ऊंची टहनियों पर रहने वाले गिद्धों में बेचैनी फैल गई। वे ऐसा नहीं बर्दाश्त कर सकते थे कि जिन पक्षियों को उन्होंने मारकर नीचे की डालों पर खदेड़ दिया था, वे ही उनके बच्चों को मार डालें।

सो गिद्धों ने भी अपने हथकंडे चलाने शुरूकर दिये। पहली बात उन्होंने यह की कि हिंसक पक्षी जब भी पेड़ के ऊपर आसमान में उड़ान भर रहे होते तो गिद्ध उन पर झपटते, उनको मारकर ऊंची फुनगियों पर टांग देते। इस प्रकार दूसरे पक्षियों के दिलों में डर भर जाता, पर वे हिम्मत न हारते।

दूसरा तरीका जो गिद्धों ने अपनाया, वह यह था कि वे उन पक्षियों में से किसी एक को बुलाते और पूछते, 'तुम सब जो नीचे की टहनियों पर रहते हो, एक दूसरे के क्या लगते हो?"

'भाई-भाई।' पक्षी उत्तर देता।

सभी गिद्ध कहकहा लगाकर चुप हो जाते। वह पक्षी हैरान और शर्मिंदा होकर, गर्दन झुका कर बैठा उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करता।

फिर कई गिद्ध बोलते, 'तुम सभी बेवकूफ और मूर्ख हो। आपने पंखों के रंग देखो। यह दूसरे पक्षियों से मिलता है?'

'नहीं' पक्षी सिर हिलाता।

'तो तुम्हारी नस्ल दूसरे पक्षी से अलग है, और सबसे अच्छी है। तुम्हारी सारी नस्ल को और नस्लों से अलग रहना चाहिए।'

इस प्रकार गिद्धों ने हर नस्ल के पक्षी को अपने पास बुलाया और उनसे एक-एक कर यही बात कही, जो पहले पक्षी से कहीं थी। पेड़ के पक्षियों के मन में दो ही बातें थीं- पेड से गिद्धों की जमात को भगा देना। उसके बाद इस वृक्ष को बांट कर उस पर अपना-अपना कब्जा कर लेना। इसलिए वे सभी पक्षी फिर गिद्धों के विरुद्ध लड़ने लगे। पर नस्लों वाली बात उनके मन में गहरे तक धंस गई थी।

जब गिद्धों को यकीन हो गया कि यहां ज्यादा दिन टिकना उनके लिए मुश्किल है, तब वे पेड़ के ऊपर की टहनियां तोड़-तोड़कर एक दूसरी जगह, जहां से वे आए थे, ले जाने लगे।

एक दिन गिद्धों ने वह पेड़ छोड़ दिया। अब पूरे का पूरा पेड़ पक्षियों के पास था। पर अब वे और अधिक साथ-साथ नहीं रहना चाहते थे। इसलिए उस पेड़ को दो हिस्सों में बांटा गया- एक हिस्सा उन पक्षियों ने ले लिया जो पुश्तों से गिद्धों के आने से पहले पेड़ की ऊंची फुनगियों पर रहते आ रहे थे। इस अदला-बदली में दोनों ओर से पंछी और बच्चों को मार दिया गया। इस पेड़ को नस्लों की नफरत का शिकार होना पड़ा।

अब दोनों पहले वाले पक्षी एक दूसरे की जान के दुश्मन बन गए। इनमें मिलनसारिता समाप्त हो गई। दोनों ओर के पक्षी पहरा देने लगे। जिससे कि एक ओर के पक्षी दूसरे की हद में दाखिल न हो सकें। अगर एक ओर का पक्षी दूसरी ओर चला जाता तो वे सभी मिल कर उसे मार डालते। इसी तरह दूसरी ओर के पक्षी भी करते। जिस दल के पक्षियों का दांव लगता वे दूसरी ओर के पक्षियों के क्षेत्र में रात को धावा बोल कर हथिला लेते। जो जगह इन पक्षियों ने एक दूसरे की हथियाई होती, उस स्थान के पक्षियों को वे मार डालते। उनके घोंसले नष्ट कर देते और सभी टहनियां भी तोड़ देते जिससे कि वे अपनी जगह वापस चले भी जाए तो उन पर दूसरी ओर के पक्षी घोंसला न बना सकें। इस प्रकार पेड़ की टहनियां टूटती जा रही थीं।

दोनों ओर से कुछ पंछियों को रात को पहरे पर बैठाया जाने लगा। अब दोनों ओर के पक्षियों का ध्यान न दाना चुगने की ओर था और न किसी और काम की ओर। इसके विपरीत उनका ध्यान एक दूसरे की जगह हथियाने, घोंसले गिराने और एक दूसरे के बच्चों को मारने में लगा रहता।

पहले यह सिलसिला रात के समय होता था, पर अब दिन दहाड़े भी होने लगा और रात-दिन चलता रहता। एक दिन ऐसा आया कि पक्षी एक दूसरे पर टूट पड़े। लड़ाई चलती रही। दोनों ओर के पक्षी मरते रहे। घोंसले नष्ट होते रहे। पेड़ के पत्ते टहनियों से टूटते रहे। अंत में पेड के सारे पत्ते झड़ गए और सारे पक्षी मर गए। जो पक्षी जख्मी थे वे कड़कड़ाती धूप में अधमिची आंखों से पेड़ को ओर देखते। पर वह वृक्ष रूण्ड-मुण्ड, बिना पत्तियों के नंगा खड़ा था, और जख्मी पक्षी, मरे हुए पक्षियों के डैनों के नीचे सिर छिपा कर कड़कड़ाती धूप से बचाव कर रहे थे।